19. सहभागिता एवं सम्बन्ध

भा.कृ.अनु. परिषद/डेयर में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग विभिन्न देशों/अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ हस्ताक्षरित समझौतों (एम.ओ.यू.)/कार्य योजनाओं के माध्यम से जारी है, जिसमें भा.कृ.अनु.प./डेयर की भूमिका नोडल विभाग की होती है। इसके अतिरिक्त, कृषि विभाग द्वारा हस्ताक्षरित समझौतों/कार्य योजनाओं में भा.कृ.अनु.प./डेयर प्रतिभागी के रूप में शामिल रहते हैं तथा सहयोगी नोडल विभाग की भूमिका निभाते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने विभिन्न राष्ट्रों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर सहयोग का एक कार्यक्रम विकसित किया है, जिसमें कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में भा.कृ.अनु.प./डेयर प्रतिभागी संस्था है। विदेश मंत्रालय तथा वाणिज्य मंत्रालय द्वारा गठित संयुक्त आयोगों/कार्य बलों में कृषि/कृषि अनुसंधान से संबंधित विषय सम्मिलित हैं जिनमें डेयर प्रत्यक्ष रूप से अथवा कृषि एवं सहकारिता विभाग के माध्यम से प्रतिभागिता करता है। यह विभाग अनुरोध पर विदेशी राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के दौरा कार्यक्रम आयोजित करता है तथा इसे विदेशी नागरिकों के प्रायोगिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्रस्ताव भी प्राप्त होते हैं।

कार्य योजना

वर्ष 2012-13 में भा.कृ.अनु.प.-आई.डब्लू.एम.आई. और भा.कृ.अनु.प.-आई.आर.आर.आई. के बीच कार्ययोजना पर हस्ताक्षर हुए।

सहयोगी परियोजनाएं

सहयोगी परियोजनाएं निम्नवत् हैं:

- भारत आस्ट्रेलियायी जैव प्रोद्योगिकी निधि (आई ए बी एफ) राउंड 6 के अन्तर्गत जैव प्रद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोगी अनुसंधान परियोजनाएं अथवा कार्यशालाएं प्रारम्भ हुईं, जो डी.बी.टी. के माध्यम से भारत सरकार तथा नवोन्मेषी, उद्योग, विज्ञान व अनुसंधान (डी.आई.आई.एस.आर.) आस्ट्रेलिया सरकार के बीच एक संयुक्त पहल है। इस प्रस्ताव को केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

डा. एस. अय्यप्पन, सचिव (डेयर) और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. द्वारा 29 नवम्बर 2012 को भा.कृ.अनु.प. - इकार्डा की सहयोग कार्यक्रम की समीक्षा बैठक का उद्घाटन

- मेलबौर्न विश्वविद्यालय में प्रायोजित औस सहायता-सार्वजनिक क्षेत्र संबंध कार्यक्रम (पी.एस.एल.पी.) वित्तपोषित क्षमता निर्माण कार्यक्रम में डा. आर.के. यादव (प्रधान वैज्ञानिक, सी.एस.एस.आर.आई., करनाल) द्वारा प्रस्तुत ''कृषि वानिकी प्रणालियों के प्रयोग से भारत में घरेलू बहिस्राव की सुरक्षित व अधिक टिकाऊ व्यवस्था'' विषय पर सहभागिता।
- भा.कृ.अनु.प. के साथ डा. केनेथ जी कैसमन से प्राप्त 'वैश्विक उपज रिक्ति तथा जल उत्पादकता' विषय पर सहयोगी परियोजना (प्रो. सस्यविज्ञान और अध्यक्ष, सी.जी.आई.ए.आर. के स्वतंत्र विज्ञान व सहभागिता परिषद, नेब्रस्का विश्वविद्यालय, लिंकौल्न)।
- 'शहरी और शहर के आस-पास कृषि एवं डब्लू.एच.ओ. के मार्गदर्शन के संदर्भ में सम्बद्ध सेवाओं में सीमान्त गुणवता वाले पानी के लिए पुनर्प्रयोग विकल्प' विषय पर नयी इंडिगो परियोजना में जल प्रबंध निदेशालय, भुवनेश्वर की सहभागिता।
- प्रथम आईएफएस अनुसंधान अनुदान के अंतर्गत विज्ञान के लिए अंतर्राष्ट्रीय फाउंडेशन द्वारा वित्तीय सहायता हेतु डा. के. स्वर्णालक्ष्मी (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सूक्ष्म जीवविज्ञान प्रभाग, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) द्वारा प्रस्तुत - ''नाइट्रोजन निर्धारण व अन्य प्रतीकात्मक लाभों को बढ़ाने हेतु मेसोराइजोबियम स्प. से चने (सिसर ऐरीटिनम) का जीनोटाइप सम्बन्ध'' पर परियोजना प्रस्ताव।
- प्रभारी पी.एम.ई., आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली से प्राप्त ''लवणीय जलाशयों की मौजूदगी में रिसिलेंट स्थानीय भूजल प्रबंधन के लिए वर्षा के पानी का संचयन प्रयोग'' विषय पर परियोजना। परियोजना क्रियान्वित करने वाली एजेंसियां हैं: जल प्रौद्योगिकी केन्द्र, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली, पश्चिमी सिडनी विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया और एम.पी.यू.ए.टी. उदयपुर।
- ''समेकित आजीविका सहायता परियोजना (आईएलसएपी)'' उत्तराखण्ड पर्वतीय आजीविका संवर्धन कम्पनी, देहरादून द्वारा (उत्तराखण्ड/ पवर्तीय लोगों के लिए उत्तराखण्ड) आजीविका परियोजना संचालित की जा रही है, जो अन्तर्राष्ट्रीय निधि से कृषि विकास परियोजना है तथा विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा को शामिल करने हेतु अनुमति ली गयी है।
- निदेशक, सीएजेडआरआई, जोधपुर से प्राप्त 'अरावली पारिस्थितिकीय-क्षेत्र, पश्चिमी भारत के संरक्षण संचालन और टिकाऊ प्रबंधन के लिए सहभागिता बनाना' पर परियोजना प्रस्ताव। इस प्रस्ताव को यूनेस्को दिल्ली कार्यालय द्वारा एजेंसी (पर्यावरण हेतु जर्मन फेडरल मंत्रालय) को वित्तीय सहायता हेतु प्रस्तुत किया गया। इस परियोजना को क्रियान्वित करने वाले सहभागी हैं: राष्ट्रीय पारिस्थितिकीय संस्थान (एन.जी.ओ.), नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा

सीएजेडआरआई एवं लक्षित क्षेत्र में सहभागी संस्थाएं हैं: मैन एण्ड बायोस्फियर नेशनल कमेटी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, राज्य वन विभाग, राजस्थान सरकार तथा पर्यावरण विज्ञान विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय।

- कृषि-खाद्य क्षेत्र के उचित विकास और गरीबी उन्मूलन का ढाचा तैयार करने के लिए नया ज्ञान और नवपरिर्वतन विषय पर सहयोगी परियोजना निदेशक तथा डीन, स्नातकोत्तर अध्ययन, आणन्द कृषि विश्वविद्यालय (ए.ए.यू.), आणन्द से प्राप्त हुआ था। इस परियोजना के सहभागी हैं: ए.ए.यू., आणन्द, सस्नैट किण्वित खाद्य पदार्थ (एक स्वीडिस-भारतीय नेटवर्क) तथा हिलदूर फंक्शनल खाद्य प्रदार्थ प्रा. लि. (स्वीडिस भारतीय संयुक्त कार्य एस.एम.ई.)। यह परियोजना खाद्य प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और पोषक/अभियांत्रिकी फैकल्टी, लुन्ड, स्वीडन जो स्वीडिस अन्तर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी (एस.आई.डी.ए. के अन्तर्गत है)।
- राष्ट्रीय मछली आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ तथा तैमासेक लाइव साईंसेज लैबोरेटरी, सिंगापुर जो सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और नानयांग प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय से संबद्ध जीव मॉडल की व्यापक श्रेणी में आनुवंशिकीय उपयोग तथा आण्विक जीव विज्ञान में आवश्यक अनुसंधान से संबंधित एक अलाभित संगठन है, के सहयोग से पौलिमोंफिक डी.एन.ए. मार्करों के प्रयोग से भारतीय प्रायद्वीपीय पानी में एशिया सीबास की संख्या को आनुवंशिक विश्लेषण पर सहयोगी अनुसंधान परियोजना।
- तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर के निदेशक अनुसंधान से प्राप्त 'किसानों की आजीविका सुरक्षा में वृद्धि के लिए प्रेशिसियन खेती' पर सहयोगी अनुसंधान। यह परियोजना टी.एन.ए.यू. और नौवा स्कौटिया कृषि महाविद्यालय के मध्य सहयोगी परियोजना है। यह बताया गया है कि शास्त्री भारतीय कनेडियन संस्थान के सदस्य के रूप में स्कौटिया कृषि महाविद्यालय को शास्त्री-भारतीय कनेडियन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के साथ एक संयुक्त/सहयोगी अनुसंधान परियोजना संचालित करने के लिए तीन लाख रुपये प्रदान किए थे।
- केन्द्रीय भूमि एवं जल संरक्षण अनुसंधान तथा प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून द्वारा इन्नो-एशिया परियोजना चरण।। में सहभागिता के उद्देश्य से सम्बंधित एक पत्र जारी करने का प्रस्ताव। यह परियोजना प्रस्ताव फ्रेड्रिच विश्वविद्यालय, जेना के प्रौफेसर प्लुगेल द्वारा बी.एम.बी.एफ. (जर्मन संघ शिक्षा व अनुसंधान मंत्रालय) को प्रस्तुत किया जा रहा है।
- 'फसल पौधे, जो अपने प्रमुख जैविक दबावों को दूर करते है' विषय पर डा. जी.टी. गूजर (अध्यक्ष, कीट विज्ञान प्रभाग) तथा प्रीतम कालिया (अध्यक्ष, सब्जी विज्ञान प्रभाग, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) द्वारा परियोजना प्रस्ताव अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया गया, जिससे डी.एस.टी. द्वारा वित्तीय सहायता मिलनी है।
- कृषि अनुसंधान, न्यूजीलैंड तथा एन.डी.आर.आई. करनाल के संयुक्त सहयोग से न्यूजीलैंड कृषि एवं वानिकी मंत्रालय द्वारा आर.एम.जी. नेटवर्क के अन्तर्गत वित्तपोषित 'आमाश्य सूक्ष्म जीवीय विविधताओं की वैश्विक गणना' पर डा. रामेश्वरसिंह (तत्कालीन अध्यक्ष डेरी सूक्ष्मजीव विज्ञान प्रभार, एन डी आर आई करनाल) द्वारा प्रस्तुत सहयोगी परियोजना।
- डा. अजय आरोड़ा (प्रधान वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) द्वारा प्रस्तुत 'सूखा सहिष्णु गेहूं को विकसित करने हेतु स्थिर हरित विशेषता की आनुवंशिक आभियांत्रिकी' पर सहयोगी परियोजना, जिससे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीय-चैक सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी.एस.टी.) द्वारा वित्तीय सहायता दी जानी है। इस परियोजना के सहभागी आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली तथा प्रयोगात्मक वनस्पति विज्ञान संस्थान, चैक गणराज्य की विज्ञान अकादमी, दबाव कायिकी प्रयोगशाला, चैक गणराज्य हैं।

सी जी संस्थानों को जारी निधि

भारत सी जी आई आर का प्रदायी सदस्य है। वर्ष 2012-13 में हमने भा.कृ.अ.प. की निधियों से योजना शीर्ष के अन्तर्गत 105,753,000 रु. का योगदान किया है और डेयर की निधियों के गैर-योजना शीर्ष के अन्तर्गत भी अंशदान व्यवस्था के माध्यम से 37,500,000 रु. का योगदान किया है।

प्रमुख गतिविधियां

- 'जलवायु परिवर्तन, ए.एस.ई.ए.एन. क्षेत्र तथा भारत में कृषि में अनुकूलता और न्यूनीकरण' विषय पर नई दिल्ली में 23-24 अगस्त 2012 तक एक कार्यशाला आयोजित की गई।

ब्रिक्स देशों की कृषि उत्पाद और खाद्य सुरक्षा पर 29 अगस्त, 2011 को कृषि विशेषज्ञ समूह की द्वितीय बैठक

- 'बी.आर.आई.सी.एस. देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) की कृषि उत्पाद तथा खाद्य सुरक्षा' पर विषेशज्ञों की एक बैठक/कृषि विशेषज्ञों के कार्य समूह की दूसरी बैठक एन.ए.एस.सी. परिसर, पूसा, नई दिल्ली में 27-28 अगस्त 2012 तक आयोजित की गई।
- 'कृषि तथा वानिकी एवं ए.एस.ई.ए.एन. - भारत कृषि एक्स्पो' पर दूसरी ए.एस.ई.ए.एन. - भारत की दूसरी मिनिस्टरियल बैठक 17-19 अक्टूबर 2012 तक एन.ए.एस.सी. परिसर, पूसा, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

कृषि-नवोन्मेषी भारत

कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग (डेयर) द्वारा स्थापित एग्रो-इनोवेट इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार की एक कम्पनी है जिसका उद्देश्य डेयर के भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की स्टाफ संख्या पर कार्य करना है और आई.पी.आर. संरक्षण, व्यावसायीकरण और विदेशी सहभागिता के माध्यम से अनुसंधान और विकास के नतीजों को उन्नत बनाना और उनका प्रसार करना है तथा जनहित में देश में और देश के बाहर इसका कार्य क्षेत्र है। वर्ष 2012-13 के दौरान पंजीकरण और अनुक्रमण से संबंधित आवश्यक जरूरतों को पूरा किया गया है। व्यावसायीकरण के लिए उचित उपलब्ध प्रौद्योगिकियों का निर्धारण और जांच करने के लिए प्रक्रिया का प्रवर्तन किया गया है। कम्पनी का संगठनात्मक ढांचा तैयार किया गया और भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई। जैसाकि वांछित व्यवसायियों की भर्ती पूरी हो गयी है इसलिए कम्पनी व्यवसायिक कार्यकलापों को शुरू करने लगेगी।

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्रः केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल अपने सात घटक महाविद्यालयों के माध्यम से पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र में छात्रों को कृषि शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करती रही। वर्ष 2012-13 में 8 स्नातकपूर्व उपाधि कार्यक्रमों में कुल 240 छात्रों का प्रवेश हुआ था। 170 छात्रों ने स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रमों में प्रवेश लिया था तथा 12 छात्रों को पीएच.डी. कार्यक्रम में प्रविष्ठ किया गया। विश्वविद्यालय में 902 छात्र पंजीकृत हैं। वर्ष 2012-13 में 196 छात्रों ने स्नातक परीक्षा पूरी की और 73 छात्रों को स्नातकोत्तर उपाधि प्रदान की गई। भा.कृ.अ.प. के अखिल भारतीय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा में अपने छात्रों के निष्पादन पर सी.ए.यू. को गर्व है। 125 छात्रों ने देश-भर में विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय संस्थानों में विभिन्न स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में प्रवेश लिया 42 छात्रों ने आईएआरआई, आईवीआरआई, सीआईएफई, एनडीआरआई, एफआरआई और आईआईटी जैसे राष्ट्रीय संस्थानों में प्रवेश लिया।

सीएयू के 25 छात्र जेआरएफ के लिए चयनित हुए जिसके आधार पर सीएयू भारत में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में चौथे स्थान पर रहा। अनुसंधान निदेशालय 22 अ.भा.स.अनु.प. केन्द्र, 5 एन.ए.आई.पी. परियोजनाएं, एक श्रेष्ठ केन्द्र, एक मेगा बीज परियोजना और 66 तदर्थ परियोजनाओं को संचालित कर रहा है। किसानों के खेत पर बीज उत्पादन कार्यक्रम के प्रवर्तन द्वारा सी.ए.यू. - आर-1 किस्म को प्रसारित करने के प्रयास किये गये। मात्सिकी महाविद्यालय के लिए 10.5 करोड़ रु. लागत वाली एक नई परियोजना मछली जैव प्रद्यौगिकीय अनुसंधान से संबंधित यह योजना 5 वर्षों के लिए डीबीटी द्वारा अनुमोदित हो गयी है। चावल की नई किस्में जैसे सी.ए.यू. - आर3 और सी.ए.यू.- आर4 को विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय स्थितियों के लिए संस्तुत किया गया है। अनन्नास रस से पाउडर बनाने की विधि हेतु प्रौद्योगिकी विकसित की गई और यह लोकप्रिय हो रही है। महाविद्यालयों और तीन कृषि विज्ञान केन्द्रों के विस्तार खंड के माध्यम से विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा पणधारियों को वैज्ञानिक सूचना पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। रबी की फसल दूसरी फसल में धान की कटाई के बाद इस क्षेत्र में प्रमुख गतिविधि संबंधी जोर देने वाले क्षेत्र में वृद्धि की जा रही है। किसानों की सहभागिता से सी.ए.यू. द्वारा विकसित की गई प्रौद्यौगिकी के आधार पर 1,000 है0 भूमि में 'शून्य जुताई के साथ सरसों की खेती पर बड़े पैमाने पर प्रदर्शन कार्यक्रम शुरू किया गया ताकि तोरई, सरसों संबंधी एन आर सी के सहयोग से आदिवासी उपयोजना के अन्तर्गत घाटी जिलों में किसानों को इसकी उपयुक्तता प्रदर्शित की जा सके।

बुन्देलखंडः कृषि अनु. शिक्षा विभाग ने बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए एक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव किया है जो 13 जिलों को सम्मिलित करेगा जैसे 7 जिले (झांसी जालौन ललितपुर, बान्दा, चित्रकूट, हमीरपुर और महोबा) उत्तरप्रदेश के हैं और 6 जिले (सागर, दामोह, टीकमगढ़, पन्ना, छत्रपुर तथा दात्तिया) मध्यप्रदेश के हैं। इस प्रयोजन से रानी लक्ष्मी बाई कृषि विश्वविद्यालय बिल, 2012 पहले ही मई 2012 को राज्य सभा में प्रस्तुत किया गया है।

परामर्शदायिता

- डा. वी. वैंकटासुब्रमण्यन् (सहायक महानिदेशक, कृ.अभि.) भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली का सार्क देशों में राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रणालियां- प्रणाली विविधता के विश्लेषण पर भारत का देश पत्र/अध्ययन सम्पर्क स्थापित करने हेतु परामर्शदायिता प्रस्ताव था जो सार्क कृषि केन्द्र, बंगलादेश से संबंधित है।
- जीवन और पृथ्वी विज्ञान से सम्बन्धित पैन अफ्रीकाई विश्वविद्यालय, इबादव, नाइजीरिया के एक प्रतिनिधि मण्डल ने 7 से 11 मई 2012 तक आई.ए.आर.आई, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान और गेंहूं अनुसंधान निदेशालय, दोनों करनाल में, तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना का दौरा किया।
- डा. एस.एस. राजू (प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र एवं निति अनुसंधान केन्द्र, पूसा, नई दिल्ली) को भारत में पशु चिकित्सा (सार्वजनिक और निजी क्षेत्र) की विविधता का मूल्यांकन विषय पर परामर्शदयिता से संबंधित रिपोर्ट तैयार करने का कार्य सौंपा गया है जो गृह केन्द्र में एक निर्धारित स्थान के सम्बन्धित विशेषज्ञ के रूप में कृषि केन्द्र बी.ए.आर.सी. काम्पलेक्स, बंगलादेश से संबंधित है।
- प्रौ. रमेश चन्द (निदेशक राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र एवं नीति अनुसंधान केन्द्र) को गृह स्टेशन में मध्यस्थ विषेशज्ञ के रूप में कॉमनवैल्थ सचिवालय,लंदन के लिए दक्षिण अफ्रिका में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, क्षेत्रीय एकता और खाद्य सुरक्षा से संबंधित प्रतिवेदन लेखन कार्य सौंपा गया।
- डा. रमेश चन्द (निदेशक - एनसीएपी) ने 3 से 4 सितम्बर, 2012 तक सार्क कृषि केन्द्र के शासी बोर्ड की छठी बैठक में शामिल होने के लिए ढाका, बांगलादेश का दौरा किया।
- डा. यू.सी. सूद (अध्यक्ष, नमूना सर्वेक्षण, आई.ए.एस.आर.आई. नई दिल्ली) 14 से 23 अक्तूबर, 2012 तक एफ.ए.ओ-टी.सी.पी. बांगलादेश परियोजना) परियोजना के अन्तर्गत एक सद्भावनापूर्ण फसल कटाई प्रयोग/प्रणाली की पहचान करने और क्रियान्वित करने के लिए परामर्शदाता के रूप में बंगलादेश सांख्यिकी ब्यूरो, बंगलादेश की टी.डी.सी. परामर्शदाता के रूप में कार्य करते रहे।
- डा. (श्रीमती) आर मणिमेकली (वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगौड) ने एक ए.ओ-टी.सी.डी.सी. परामर्शदात्री के रूप में 2 से 29 जुलाई, 2012 तक श्रीलंका का दौरा किया।

- डा. पी.एम. जैकब (अध्यक्ष, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय केन्द्र कयांगुलम) ने एफ.ए.ओ. – टी.सी.डी.सी. परामर्शदाता के रूप में 23 से 29 जुलाई, 2012 तक श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. पी. रौट्रे (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.आई.एफ.ए., भुवनेश्वर) ने एफ.ए.ओ. – टी.सी.डी.सी. परियोजना के अन्तर्गत टी.सी.एस.सी. विशेषज्ञ परामर्शदाता के रूप में 7 से 26 अगस्त, 2012 तक बंगलादेश का दौरा किया।
- डा. श्रीमती कविता गुप्ता (वरिष्ठ वैज्ञानिक, पौध संगरोध प्रभाग, एनबीपीजीआर, नई दिल्ली) को गृह केन्द्र में 'बायोसेफटी रेगुलेशन्स ऑफ एशिया पेसिफिक कंट्रीज अपारी प्रकाशन के पुनर्लेखन से संबंधित प्रतिवेदन लेखन का कार्यभार सौंपा गया।
- डा. आर.के. जैन (परियोजना समन्वयक (सूत्रकृमि) ने अ.भा.स.अ.प. – पौध परजीवी सूत्रकृमि तथा उनके नियंत्रण के लिए समेकित प्रयास, सूत्रकृमि प्रभाग, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) ने 2 से 5 सितम्बर, 2012 तक अफगानिस्तान गणराज्य का दौरा किया।
- डा. पी. एस. बिर्थल (प्रधान वैज्ञानिक, सी.ए.ई.पी.आर., पूसा, नई दिल्ली) को भारतीय कृषि में विकास की विधियां व स्रोत पर आई.एफ.एफ.पी.पी.आर.आई. वाशिंगटन, यू.एस.ए. की ओर से गृह स्टेशन में प्रतिवेदन लेखन का कार्य सौंपा गया।
- डा. टी. श्रीनिवास (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीटीआरआई, तिरूवनन्तपुरम) को कैरियो मे मिश्र, ईहोपिया, पैलेस्टाइन, पैल्ल, सूडान तथा यमन से आए प्रतिभागियों के लिए बीज विपणन पाठ्यक्रम संबंधी अल्पकालिक परामर्शदायिता हेतु गृह स्टेशन में प्रतिवेदन लेखन का कार्य सौंपा गया।
- प्रोफेसर रमेश चन्द (निदेशक), डा. पी. रामासुन्दरम (प्रधान वैज्ञानिक), डा. (श्रीमती) उषा रानी आहुजा (प्रधान वैज्ञानिक), श्री राजेश बी. के. (वैज्ञानिक) तथा श्री ख्याली राम चौधरी (तकनीकी अधिकारी, एनसीएपी, नई दिल्ली) को सीजीआईएआर स्वतंत्र विज्ञान – सहभागिता परिषद, एफएओ रोम, इटली गृह स्टेशन में परामर्शदायिता परियोजना का कार्य सौंपा गया।
- डा. कौशिक बनर्जी (भा.कृ.अनु.प. राष्ट्रीय फेलो, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे) ने 12 से 23 नवम्बर, 2012 तक सैल जोज, कोस्टारिका का दौरा किया।
- डा. डी. के. घोष (वरिष्ठ वैज्ञानिक, विषाणु विज्ञान, नीम्बू वर्गीय फल संबंधी राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, नागपुर) ने 23 नवम्बर से 24 दिसम्बर, 2012 तक काठमांडू, नेपाल का दौरा किया।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन/कार्यशालाएं

- विश्व में कुसुम अनुसंधान तथा विकास: स्थिति और कार्यनीतियों पर आठवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भा.कृ.अनु.प. के तत्वावधान में भारतीय तिलहन अनुसंधान सोसायटी, तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद के माध्यम से 19 से 23 जनवरी 2012 तक हैदराबाद में आयोजित किया गया।
- मैक्रो आण्विक संरचना एवं क्रियाओं में अद्यतन परिदृश्य विषय पर 27 से 28 जनवरी,2012 तक केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान पोर्टब्लेयर में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- एनआईएएन तथा पी, बंगलूरू में 9 से 10 फरवरी, 2012 तक पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादन हेतु न्युट्रैस्यूटिक का उपयोग' विषय पर भारत–अमरीका द्विपक्षीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 'दक्षिण एशिया में खुरपका–मुंहपका रोग के प्रभावी नियंत्रण में वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी चुनौतियां' पर 13–15 फरवरी 2012 तक एफ.एओ.–भा.कृ.अ.प. अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन एन.ए.एस.सी. परिसर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।
- कृषि में महिलाएं: लक्षित अनुसंधान, विस्तार तथा नीति' पर 13 से 15 मार्च, 2012 तक एन ए एस सी परिसर, नई दिल्ली में वैश्विक सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- डेरी व खाद्य उद्योग से संबंधित मूल्यवर्धन तथा सुरक्षा पहलुओं में कार्यनीतियों' पर 15 से 16 मार्च, 2012 तक मद्रास पशुचिकित्सा महाविद्यालय, चेन्नई में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- नई दिल्ली में वर्ष 2015 में अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस तथा 22वें अन्तर्राष्ट्रीय चरागाह कांग्रेस' की मेजबानी भारतीय रेंज मैनेजमेंट सोसायटी तथा भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गयी।
- अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन: भविष्य के लिए डिजाइनर चावल पर वार्ता – 2012, 9 से 10 जुलाई तक हैदराबाद में आयोजित किया गया।
- आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, सभागार, राजेन्द्र नगर, हैदराबाद में 28 से 30 नवम्बर, 2012 तक वैश्विक खाद्य व जैव सुरक्षा के लिए 'पौध संरक्षण' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।
- कृषि में उपयोगी जीवों का सीमापार वाली बीमारियों और कीटों के प्रबंधन के लिए आवश्यक नीति और अनुसंधान सम्मेलन जिसे भा.कृ.अ.प. और एशिया–पेसिफिक कृषि अनुसंधान संस्थाओं की संस्था द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया तथा 10 अक्टूबर 2012 को एनएएससी परिसर, नई दिल्ली में सामान्य असेम्बली बैठक आयोजित की गई।
- गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर में 15 से 18 अक्टूबर 2012 तक 'गन्ना अनुसंधान में नये पैराडिग्म' पर अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम आयोजित किया गया।
- कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ में 6 से 10 नवम्बर 2012 तक 'फलों व सब्जियों के स्वास्थ्य का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव 2012' पर 5वां अन्तर्राष्ट्रीय सिम्पोजियम आयोजित किया गया।
- एनएएससी परिसर, नई दिल्ली में 19 से 22 नवम्बर 2012 तक 'खुम्भी जीव विज्ञान तथा खुम्भी उत्पाद' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।
- आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय सभागार, राजेन्द्र नगर, हैदराबाद में 28 से 30 नवम्बर 2012 तक 'वैश्विक खाद्य व जैव सुरक्षा हेतु पादप संरक्षण' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

अति विशिष्ट प्रतिनिधिमंडल

- नामीबिया गणराज्य से प्रतिनिधिमंडल के साथ माननीय त्जेकर्स त्वेया, व्यापार व उद्योग उपमंत्री ने 20 से 21 मार्च, 2012 तक केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयम्बटूर का दौरा किया।
- महामहिम श्री बुइ बा बौंग, कृषि एवं ग्रामीण विकास उपमंत्री, वियतनाम ने प्रतिनिधिमंडल के साथ 29 मार्च, 2012 को आइ.ए.आर.आई. और भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली तथा 26 मार्च, 2012 को भारतीय बागवानी संस्थान, बंगलूरु का दौरा किया।
- महामहिम श्री लुइस मायोल बौरचॉन (कृषि मंत्री, चिलि) ने 9 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ 4 मई, 2012 को भा.कृ.अनु.प. एन.बी.पी.जी.आर. तथा राष्ट्रीय कृषि विज्ञान म्यूजियम, नई दिल्ली का दौरा किया।
- महामहिम श्री जोज पैचेओ, कृषि मंत्री मोजैम्बिक गणराज्य सरकार ने 14 जून, 2012 को आई.ए.आर.आई. तथा राष्ट्रीय कृषि विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली का और 15 जून, 2012 को एन.डी.आर.आई., करनाल का दौरा किया।
- महामहिम श्री नगानौन द्जौमेसी इम्मानेल (अर्थव्यवस्था नियोजन तथा क्षेत्रीय विकास, कैमरून गणराज्य) ने 12 से 16 सितम्बर, 2012 तक उपमहानिदेशक (बागवानी) से भेंट की।
- बंगलादेश की महामहिम कृषि मंत्री बेगम मातिया चौधरी के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने 6 से 10 नवम्बर 2012 तक भारत में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान म्यूजियम/आईएआरआई, नई दिल्ली, सीएस एसआरआई, करनाल तथा सीआरआई, कटक का दौरा किया।

प्रतिनियुक्ति पर वैज्ञानिकों के दौरे

- डा. विकास वी. के. (वैज्ञानिक, आईएआरआई, क्षेत्रीय केन्द्र, विलिंग्टन) ने प्रारंभिक गेहूं सुधार कार्यक्रम, 2012 से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए 1 से 31 मई, 2012 तक मैक्सिको का दौरा किया।
- डा. जीतेन्द्र कुमार सुन्दरे (प्रधान वैज्ञानिक, सीआईबीए का के.आर.सी. काकद्वीप, प. बंगाल) क्षेत्र निरीक्षण और ''गंगा के तटवर्ती क्षेत्रों में कृषि और जलजीव पालन प्रणालियों के क्रियान्वयन को बढ़ाना'' विषय पर आयोजित कार्यशाला में सम्मिलित होने के प्रयोजन से 25 मार्च से 2 अप्रैल, 2012 तक बंगलादेश के दौरे पर रहे।
- डा. सारंगी और डा. एस. मंडल (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसएसआरआई, करनाल) 25 मार्च से 2 अप्रैल, 2012 तक ''सीपीडब्लूएफजी क्षेत्र दौरा तथा नियोजन समीक्षा बैठक व गंगा बीडीसी परावर्तन कार्यशाला'' में सम्मिलित होने के लिए बंगलादेश के दौरे पर गये।
- डा. एम.एम. पांडे (उपमहानिदेशक, अभि., भा.कृ.अनु.प.) क्षेत्रीय विकास कार्यशाला में सम्मिलित होने के प्रयोजन से 10 से 13 अप्रैल, 2012 तक ऐडिस, अबाबा, इथोपिया के दौरे पर गये।
- डा. आर.पी.एस. वर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, डी.डब्लू.आर., करनाल) ने 10 से 20 अप्रैल, 2012 तक ग्यारहवें अन्तर्राष्ट्रीय बाजार सिंपोजियम में सम्मिलित होने के लिए चीन का दौरा किया।
- डा. वी. रवीन्द्र बाबू (प्रधान वैज्ञानिक, डी.आर.आर., हैदराबाद) सस्योत्तर व राइस टीम बैठक में भाग लेने के लिए 15 से 18 अप्रैल, 2012 तक ढाका, बंगलादेश के दौरे पर रहे।
- डा. के. के. बंद्योपाध्याय (प्रधान वैज्ञानिक), डा. वी.के. सहगल (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डा. एस. नरेश कुमार (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) 16 से 18 अप्रैल, 2012 तक मौसम पुर्वानुमान एवं फसल उपज पूर्वानुमान से संबंधित कार्यशाला में सम्मिलित होने के प्रयोजन से कोलम्बो, श्रीलंका के दौरे पर गये।
- डा. (श्रीमती) एस. उमा (प्रधान वैज्ञानिक, रा.के.अ.के., तिरूचिलापल्ली) 17 से 19 अप्रैल, 2012 तक 'संरक्षण के लिए कार्यनीति पर वैश्विक फसल विविधता विशेष वित्त पोषित परियोजना तथा पादप अनुवांशिक संसाधनों का उपयोग' विषय पर सिंपोजियम में सम्मिलित होने के लिए रोम, इटली के दौरे पर गये।
- डा. दिबाकर महन्ता (वैज्ञानिक, वी.पी.के.एस., अल्मोड़ा) तथा जे.वी.एन.एस. प्रसाद, (व.वै. सस्य विज्ञान, सी.आर.आई.डी.ए., हैदराबाद) ने कार्बन फुटप्रिंट मूल्यांकन प्रशिक्षण कार्यशाला तथा जलवायु परिवर्तन अनुसंधान नियोजन कार्यशाला में संम्मिलित होने के लिए 23 से 27 अप्रैल, 2012 तक नेरोबी, केन्या का दौरा किया।
- डा. अनुरवा पटनायक (प्रधान वैज्ञानिक, जैव प्रौद्योगिकी, भा.कृ.अनु.प., पूर्वोत्तर पवर्तीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, मेघालय) ने 24 से 27 अप्रैल, 2012 तक प्रतिकूल चावल पर्यावरण के लिए कंजोर्षियम की ग्यारहवीं समीक्षा व स्टीयरिंग समिति में भाग लेने के लिए थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) जी. पद्मजा (प्रधान वैज्ञानिक, तथा अध्यक्ष) तथा डा. एम.एस. संजीव (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.टी.सी.आर.आई., तिरूवन्नतपुरम) 29 अप्रैल से 7 मई, 2012 तक ''शकरकन्दी का सस्योत्तर उपयोग व प्रबंधन'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए बंगलादेश के दौरे पर गयी।
- डा. टी.एम. गजनाना (प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र, आई.आई.एच.आर., बंगलूरू) ने 1 से 4 मई तक क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए बैंकॉक और चन्ताबरी, थाइलैंड़ का दौरा किया।
- डा. एस.के. चतुर्वेदी (अध्यक्ष, सीआई, आईआईपीआर, कानपुर) ''उष्ण कटिबंधीय फलीफसल (एल अी -।)'' परियोजना की वार्षिक बैठक-2012 में सम्मिलित होने के लिए 7 से 11 मई, 2012 तक एडिस अबाबा, इथोपिया के दौरे पर रहे।
- डा. शंकरलाल जाट (वैज्ञानिक, सस्यविज्ञान, डी.एम.आर., नई दिल्ली) 21 से 22 मई तक ''संरक्षण कृषि'' पर उच्च पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु सी.आई.एम.एम.वाई.टी., मैक्सिको के दौरे पर रहे।
- श्री राजीव महर्षि, विशेष सचिव, डेयर तथा सचिव, भा.कृ.अनु.प.) 10 से 14 जून, 2012 तक सी.आई.एम.एम.वाई.टी. में अनुसंधान सुविधाएं तथा

प्रयोगशालाओं का उन्नयन का जायजा लेने के लिए मैक्सिको के दौरे पर गये ताकि इस प्रकार की सुविधाएं भारत में बी.आई.एस.ए. केन्द्रों में सुलभ करायी जा सकें।

- डा. आर. साई कुमार (निदेशक), डा. वी.के. यादव (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डा. रमेश कुमार (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डा. अविनाश सिंगोडे (वैज्ञानिक) (सभी डी.एम.आर., नई दिल्ली से) ने 11 से 16 जून, 2012 तक 'एशिया के लिए जैविक दबाव की सहिष्णु मक्का संबंधी वार्षिक प्रगति समीक्षा तथा नियोजन बैठक एवं दुगुने हैप्लॉइड संबंधी प्रशिक्षण पाठ्क्रम में सम्मिलित होने के लिए जर्मनी का दौरा किया।
- डा. वी. के. सहगल (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 13 से 14 जून, 2012 तक 'उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में फसल उपज आकलन: हेटेरोजीनियस स्मॉलहोल्डर पर्यावरणी स्थितियों के लिए अवधारणा, उपयोग और चुनौतियां' पर कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु इस्प्रा, इटली का दौरा किया।
- डा. जी. बाइजू (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डा. टी. मकेशकुमार (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.टी.आर.आई., तिरूवनन्तपुरम) ने 18 से 24 जून, 2012 तक वैश्विक कसावा सहभागिता द्वितीय वैज्ञानिक सम्मेलन जी सी पी 2 – ।। वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कसावा में भावी चुनौतियां तथा जनरेशन चुनौती प्रायोजित सेटेलाइट बैठक में सम्मिलित होने के लिए कम्पाला, युगांडा का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) एम.एन. शीला (प्रधान वैज्ञानिक, सी टी आर आई, तिरूवनन्तपुरम) ने 18 से 24 जून, 2012 तक वैश्विक कसावा सहभागिता द्वितीय वैज्ञानिक सम्मेलन जी सी पी 2 – ।। वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कसावा भावी चुनौतियां तथा जनरेशन चुनौती प्रायोजित सेटेलाइट बैठक में सम्मिलित होने के लिए कम्पाला, युगांडा का दौरा किया।
- डा. ए. के. सिंह (उपमहानिदेशक, एन.आर.एम.), डा. डी.के. शर्मा (निदेशक, सी.एस.एस.आर.आई., करनाल), डा. भगवती प्रसाद भट्ट (निदेशक, भा.कृ.अ.प.– आर.सी.ई. आर.– पटना) तथा डा. बी. वेंकटेस्वर्लु (निदेशक, सी.आर.आई.डी.ए., हैदराबाद) 21 से 23 जून, 2012 तक आई.सी.ए.आर. – आई.डब्लू.एम.आई. स्टीयरिंग समिति बैठक में सम्मिलित होने के लिए कोलम्बो, श्रीलंका के दौरे पर रहे।
- डा. ए. के. श्रीवास्तव (निदेशक, एनडीआरआई, करनाल), डा. आर.के. भट्ट (प्रधान वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, सीएजेडआरआई, जोधपुर), डा. टी.के. भाटी (प्रधान वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान, सी.ए.जेड.आर.आई., जोधपुर), डा. बी.के. माथुर (प्रधान वैज्ञानिक, पशुपोषण, सी.ए.जेड.आर.आई., जोधपुर), डा. मोहम्मद ओस्मान (प्रधान वैज्ञानिक (स.वि.), सी.आर.आई.डी.ए., हैदराबाद), डा. जी.आर. मारूति शंकर (प्रधान वैज्ञानिक, सी.आर.आई.डी.ए., हैदराबाद), तथा डा. श्रीनाथ दीक्षित (प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विस्तार, सी.आर.आई.डी.ए., हैदराबाद) ने 25 से 28 जून, 2012 तक 'शुष्क क्षेत्र में गरीबों के लिए समेकित कृषि उत्पादन प्रणालियां' पर सीजीआईएआर अनुसंधान कार्यक्रम हेतु कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु दुबई, यूएई का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) एस. उमा (प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, तिरूचिरापल्ली, तमिलनाडु) ने 9 से 13 जुलाई, 2012 तक मुसानेट विविधता कार्यकारी समूह की बैठक (9 से 10 जुलाई, 2012) तथा पूर्व प्रजनन हेतु मुसा जंगली संबंधित प्रजातियों पर परामर्श बैठक में भाग लेने हेतु इंडोनेशिया का दौरा किया। (11 से 12 जुलाई 2012)
- डा. के.सी. बंसल (निदेशक, एन.बी.पी.जी.आर., नई दिल्ली) ने 30 से 31 जुलाई, 2012 तक ऊष्मा एवं सूखा कंजोर्शियम नियोजन बैठक में सम्मिलित होने के लिए रौथमस्टेड, इंग्लैड का दौरा किया।
- डा. सी. मोहन (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी.टी.सी.आर.आई., तिरूवनन्तपुरम) ने 20 से 31 अगस्त, 2012 तक शकरकन्दी के सुधार के लिए आधुनिक प्रजनन तकनीकों पर उच्च पाठ्क्रम मे सम्मिलित होने के लिए बेल्जियम का दौरा किया।
- डा. प्रतिभा शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली) ने 27 से 30 अगस्त, 2012 तक 'टी जी 2012 नवोन्मेषी तथा उपयोग पर ट्रिकोडर्मा व ग्लोक्लोडियम 2012 में सम्मिलित होने हेतु न्यूजीलैंड का दौरा किया।
- डा. के के विनोद (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आई., अनुसंधान केन्द्र, अदुथुराई, तमिलनाडु) 27 से 31 अगस्त, 2012 तक ''फॉस्फोरस की सहिष्णुता वाले चावल का आण्विक मार्कर प्रजनन'' पर प्रशिक्षण कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए फिलिपीन्स की यात्रा की।
- डा. राजशेखर मिश्रा (प्रधान वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केन्द्र, सी.टी.सी.आर.आई., भुवनेश्वर), डा. एम अनन्तरमण (प्रधान वैज्ञानिक, सी.टी.सी.आर.आई., तिरूवनन्तपुरम), तथा डा. सोइबन बसन्ता सिंह (संयुक्त निदेशक, पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, मिजोरम केन्द्र) ने 28 से 31 अगस्त, 2012 तक 'एशियायी कन्द–मूल परियोजना द्वारा खाद्य सुरक्षा संबंधी क्षेत्रीय कार्यशाला' में सम्मिलित होने के प्रयोजन से चीन का दौरा किया।
- डा. शायक एन. मीरा (वरिष्ठ वैज्ञानिक, डीआरआर, हैदराबाद) 1 सितम्बर, 2012 से 28 फरवरी, 2013 तक आईआरआरआई, मनीला, फिलिपीन्स का भावी विकास में सहायता करने के उद्देश्य से फिलिपीन्स के दौरे पर हैं।
- डा. शंकर प्रसाद दास (वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुपपूप क्षे.अ.प., त्रिपुरा केन्द्र) ने 2 से 9 सितम्बर, 2012 तक ''सूखा सहिष्णुता के लिए मार्कर सहायी प्रजनन'' पर कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए फिलिपीन्स का दौरा किया।
- डा. सुरेश पाल (अध्यक्ष, आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 11 सितम्बर 2012 को सीजीआइएआर के कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकेतक कार्यक्रम की सलाहकार समिति बैठक में सम्मिलित होने के लिए वाशिंग्टन डीसी, यूएसए का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) बी. मीना कुमारी (उप महानिदेशक, मात्स्यिकी) ने 16 से 17 सितम्बर, 2012 तक ''हिल्सा मछली और जलजीवपालन के लिए उसकी क्षमता'' पर क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए बंगलादेश का दौरा किया।
- डा. ए.पी. शर्मा (निदेशक), डा. उत्पल भौमिक (अध्यक्ष), डा. बी.के. बेहरा (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा ए.के. साहू

(वैज्ञानिक, सीआरएफआरआई, बैरकपुर) ने 16 से 18 सितम्बर, 2012 तक ''हिल्सा मछली और जलजीवपालन के लिए उसकी क्षमता'' पर क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए बंगलादेश का दौरा किया।

- डा. एस.एल. गोस्वामी (निदेशक, डा. एन. शिवरमणे (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डा. रणजीत कुमार (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डा. के. श्रीनिवास (नार्म हैदराबाद) ने 24 से 26 सितम्बर, 2012 तक नार्म – सिम्मिट सहयोगी अनुसंधान कार्यक्रम ''दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए मक्के का उत्पादन व विनिवेश परिदृश्य में सम्मिलित होने के लिए काठमांडू, नेपाल का दौरा किया।
- डा. जे.वी.एन.एस. प्रसाद (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान, क्रीडा, हैदराबाद) ने 8 से 10 अक्तूबर, 2012 तक 'पूरे फार्म व भूदृश्य स्केलों पर लघुहोल्डर के लिए न्यूनीकरण विकल्पों के मूल्यांकन' पर कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए जर्मनी का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) इन्दु शर्मा (परियोजना निदेशक, डी.डब्लू.आर., करनाल) ने 8 से 14 अक्तूबर, 2012 तक संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन केन्द्र, अफ्रीका मे खाद्य सुरक्षा हेतु गेहूं तथा चौथी गेहूं प्रबंधन समिति (डब्लू-एम सी)' में सम्मिलित होने हेतु ऐडिस अबाबा, ईथोपिया का दौरा किया।
- डा. त्रिलोचन महापात्रा (निदेशक, सीआरआरआई, कटक) तथा डा. बी सी वीरकतमाथ (परियोजना निदेशक, डीआरआर, हैदराबाद) ने 11–12 अक्टूबर 2012 तक 'चावल क्षेत्र में संरचनात्मक रूपान्तरण: अनुसंधान व विकास के लिए उलझनें' पर द्वितीय वैश्विक विज्ञान फौरम में सम्मिलित होने के लिए फिलिपींस का दौरा किया।
- डा. टी. राम (प्रधान वैज्ञानिक), डा. पी रेवती (वैज्ञानिक, डी आर आर, हैदराबाद), डा. पी. समैया (वैज्ञानिक, आईएआरआई, नई दिल्ली) तथा श्री बी.एल. मीना (वैज्ञानिक, पादप जैवप्रौद्योगिकी), पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनु. परिसर केन्द्र, लेम्बुचेरा) ने 15 से 26 अक्तूबर, 2012 तक समेकित प्रजनन बहुवर्षीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु नीदरलैंड़ का दौरा किया।
- डा. यशपाल सिंह सहरावत (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आई. नई दिल्ली) ने 26 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2012 तक विकास हेतु कृषि अनुसंधान पर वैश्विक सम्मेलन में भाग लेने के लिए पुण्टा डेल एस्टे, उरूगुए का दौरा किया।
- डा. के.डी. कोकाटे (उपमहानिदेशक, कृषि विस्तार) ने 29 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2012 तक विकास हेतु कृषि अनुसंधान पर वैश्विक सम्मेलन में भाग लेने के लिए पुण्टा डेल एस्टे, उरूगुए का दौरा किया।
- डा. एच.एस. गुप्ता (निदेशक, आईएआरआई, नई दिल्ली) और डा. (श्रीमती) कृष्णा श्रीनाथ (निदेशक, डीआरडब्लूए, भुवनेश्वर) ने 29 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2012 तक विकास हेतु कृषि अनुसंधान पर वैश्विक सम्मेलन में भाग लेने के लिए पुण्टा डेल एस्टे, उरूगुए का दौरा किया।
- डा. एम. आनन्दराज (निदेशक, भरतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, कालीकट) ने 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2012 तक कोलम्बो, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. श्रीधर गौतम (वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय उपोष्ण उद्यान संस्थान, लखनऊ) ने 26 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2012 तक उरूगुडी का दौरा किया।
- डा. गौरव कुमार शर्मा (परियोजना निदेशक, एफ.एम.डी., आई.बी.आर.आई. परिसर, मुक्तेश्वर) ने 29 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2012 तक ओआईई/एफएओ सन्दर्भ प्रयोगशाला नेटवर्क वार्षिक बैठक में सम्मिलित होने के लिए जेरेज डे.ला. फ्रोंटेरा, स्पेन का दौरा किया।
- डा. सी आर मेहता (अध्यक्ष ए.एम.डी., सी.आई.ए.ई., भोपाल) ने 23 से 25 अक्तूबर, 2012 तक कृषि अभियंत्रिकी तथा मशीनरी से संबंधित संयुक्त राष्ट्र एशियन पेसिफिक केन्द्र की तकनीकी समिति के 8वें सत्र में सम्मिलित होने के लिए पेरंडेनिया, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. रमेश चंद (निदेशक, एन.सी.ए.पी., पूसा, नई दिल्ली) ने 1–2 अक्टूबर 2012 तक एशिया और पेसिफिक में खाद्य प्रदार्थों की अधिक कीमत के संदर्भ में उच्चस्तरीय क्षेत्रीय परामर्श बैठक में सम्मिलित होने हेतु थाइलैण्ड का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) कविता गुप्ता (वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनबीपीजीआर, नई दिल्ली) ने, 26–27 अप्रैल, 2012 तक मसाल कंजौरसियम बैठक में शामिल होने के लिए वाशिंग्टन डी.सी., अमेरिका का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) कविता गुप्ता (वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनबीपीजीआर, नई दिल्ली) ने, 8–10 अक्टूबर, 2012 तक एशिया पेसिफिक वन इनवेसिव स्पेसीज नेटवर्क कार्यशाला में पत्र प्रस्तुत करने हेतु गदजाह माडा विश्वविद्यालय, योगिकात्रा, इंडोनेशिया का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) कविता गुप्ता (वरिष्ठ वैज्ञानिक, एनबीपीजीआर, नई दिल्ली) ने, 12–13 नवम्बर, 2012 तक बैंकाक, थाइलैण्ड का दौरा किया।
- डा. एन.वी.पी.आर. गंगा राव (व.वै. पादप प्रजन्न, तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद) ने 22 जनवरी, 2013 तक अर्थात् दो वर्ष तक नौरोबी, केनिया के दौरे पर रहे।
- डा. हिमांशु पाठक (व.वै., आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 14 से 25 मई 2012 तक जलवायु परिर्वतन वार्ता से संबंधित सम्मेलन, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित है, में शामिल होने के लिए बौन, जर्मनी का दौरा किया।
- डा. हिमांशु पाठक (व.वै., आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 28 अगस्त से 5 सितम्बर, 2012 तक बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. एम आनन्दराज (निदेशक आईआईएसआर, कालीकट) ने 7–8 अगस्त 2012 तक अन्तर्राष्ट्रीय काली मिर्च समुदाय, इंडोनेशिया द्वारा आयोजित एचसीएमसी में कीट और रोगों के नियंत्रण पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए वियतनाम का दौरा किया।
- डा. एस. वी. अलवन्दि (व.वै.) सीआईबीए, चेन्नई ने 9 जुलाई से 1 अगस्त 2012 तक श्रिम्प शीघ्र परिपक्वता सिन्ड्रोंम/एक्यूट डिपेटो पैंक्रैटिक नेक्रोसिस सिन्ड्रोंम पर एशिया पैसिफिक संकटकाल क्षेत्रीय प्रामर्श संबंधी बैठक में भाग लेने के लिए बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. के.एम.एल. पाठक (उप-महानिदेशक, पशु-विज्ञान ने

16-17 अगस्त 2012 तक एशियाई पशुधन चुनौतियां, अवसर और अनुक्रिया पर क्षेत्रीय नीति फौरम/वार्ता में सम्मिलित होने के लिए बैंकाक का दौरा किया।

- डा. के.पी. जीतेन्द्रन (प्र.वै., सीआईबीए, चेन्नई), डा. टॉम्स सी. जोसफ (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईएफटी, कोचि) डा. जी. राठौर (वरिष्ठ वैज्ञानिक, एन.बी.एफ.जी.आर., लखनऊ) डा. पी.के. साहू (राष्ट्रीय फैलो, सी.आई.एफ.ए., भुवनेश्वर) तथा डा. एन के सनिल (व.वै. एस.जी.), सी.एम.एफ.आर.आई., कोच्चि) ने 25 से 26 जुलाई 2012 तक जलीय पशु रोग प्रयोगशालाएं एशिया - पेसिफिक के लिए क्षेत्रीय प्रवीणता परीक्षण कार्यक्रम पर कार्यशाला में भाग लेने के लिए बैंकाक, थाईलैंड का दौरा किया।
- डा. ए.जी. पोन्नियाह (निदेशक, सीआईबीए) तथा डा. एम. मुरलिधा (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईबीए, चेन्नई) ने 14 से 15 मई 2012 तक 'जलवायु परिवर्तन पर जलीय जलवायु परियोजना सहभागी बैठक तथा 16 मई, 2012 को क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. ए.जी. पोन्नियाह (निदेशक, सीआईबीए) ने 3 से 5 जुलाई, 2012 तक 'एशिया पेसिफिक में जलजीवपालन मूल्यांकन उपकरणों का प्रयोग' संबंधी क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. टी. महापात्रा (निदेशक, सीआरआरआई, कटक) ने 3 से 4 जुलाई, 2012 तक मौंटपेलियर में अन्तर्राष्ट्रीय चावल आयोग के लिए भावी विकल्प पर वैश्विक चावल गोलमेज: नई दृष्टि, नई कार्यनीतियां सम्मेलन में भाग लेने के लिए फ्रांस का दौरा किया।
- डा. एस.एस. राजू (प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र, एनसीएपी, पूसा, नई दिल्ली) ने 17 से 18 जुलाई, 2012 तक 'सार्क देशों में पशु चिकित्सा सेवाओं (सार्वजनिक व निजी क्षेत्र) की विविधता का मूल्यांकन' पर परामर्श बैठक में सम्मिलित होने हेतु इस्लामाबाद, पाकिस्तान का दौरा किया।
- डा. वी.के. भाटिया (निदेशक, आईएएसआरआई, नई दिल्ली) ने 18 से 20 जुलाई, 2012 तक एशिया तथा पेसिफिक हेतु संयुक्त राष्ट्र अर्थशास्त्र तथा सामाजिक आयोग के एसजीएएस की द्वितीय बैठक में कृषि सांख्यिकी से संबंधित स्टीरिंग ग्रुप के सदस्य के रूप में सम्मिलित होने हेतु बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. शिवकुमार (अध्यक्ष, फसल सुधार प्रभाग, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कटक) अगले 2 वर्ष यानी 30 अप्रैल 2014 तक एलेप्पो, सीरिया के दौरे पर हैं।
- डा. जे.सी. डागर (सहायक महानिदेशक, स.वि. एवं कृ.वा.) ने 11 से 12 अप्रैल, 2012 तक ए.पी.ए.ए.आर.आई./ सी.सी.ए.एफ. द्वारा आयोजित 'एशिया में जलवायु अनुकूल कृषि, अनुसंधान व विकास प्राथमिकताएं' पर आयोजित कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु बैंकाक का दौरा किया।
- डा. के. सुनील कुमार मोहम्मद (प्रधान वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, मौलस्कैन मात्स्यिकी प्रभाग, सीएमएफआरआई, कोचीन) ने बंगाल की खाड़ी वृहद समुद्री पारिस्थितिकी स्वास्थ्य संकेतक कार्यकारी समूह बैठक' में सम्मिलित होने के लिए 3 से 4 अप्रैल, 2012 तक पेनंग, मलेशिया का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) बी. मीना कुमारी (उपमहानिदेशक, मात्स्यिकी) ने 27 से 29 मार्च 2012 तक 24वें एनएसीए की शासी परिषद की बैठक में भाग लेने के लिए कम्बोडिया का दौरा किया।
- डा. (श्रीमती) मालविका ददलानी (संयुक्त निदेशक, अनुसंधान, आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 4 से 5 अप्रैल, 2012 तक सार्क बीज फोरम की तदर्थ समिति की तीसरी बैठक में सम्मिलित होने हेतु ढाका, बंगलादेश का दौरा किया।
- डा. एच.एस. गुप्ता (निदेशक, आईएआरआई, नई दिल्ली), डा. (श्रीमती) इन्दु शर्मा (परियोजना निदेशक), डा. राजकुमार गुप्ता (प्रधान वैज्ञानिक), डा. ज्ञानेन्द्र सिंह (प्रधान वैज्ञानिक), गेहूं अनुसंधान निदेशालय, करनाल तथा डा. जगदीश राणे (अध्यक्ष, सूखा दबाव प्रबंधन, एनआईएएसएम, बारामती एवं डा. एस. नरेश कुमार (वरिष्ठ वैज्ञानिक, पर्यावरण विज्ञान, आईएआरआई, नई दिल्ली) 26 से 27 अप्रैल, 2012 तक एशिया में गेहूं उत्पादकता सुधार पर क्षेत्रीय परामर्श बैठक में सम्मिलित होने हेतु थाइलैंड के दौरे पर रहे।
- डा. एच. एस. गुप्ता (निदेशक, आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 'टिकाऊ फसल उत्पादन हेतु पादप विज्ञान: यूरोप तथा प्रगतिशील देशों के बीच सहभागिता को मजबूत बनाना' पर एफएओ की परामर्शदायी कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु 25 से 27 जून, 2012 तक रोम, इटली का दौरा किया।
- डा. बीएचएम पटेल (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईवीआरआई, इज्जतनगर) ने 8 से 10 मई, 2012 तक पशु कल्याण संबंधी विकसित अवधारणाओं के लिए चौथी कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. वी.के. सिंह (अवर सचिव, डेयर, नई दिल्ली) 14 से 25 मई, 2012 तक बौन, जर्मनी के दौरे पर रहे।
- डा. यू.सी. सूद (अध्यक्ष, नमूना सर्वेक्षण प्रभाग, आई.ए.एस.आर.आई., नई दिल्ली) ने 13 से 18 मई, 2012 तक 'कृषि गणना एवं सर्वेक्षण हेतु नमूनीकरण पर क्षेत्रीय कार्यशाला' पर एफएओ-एएफएमए कार्यशाला में सम्मिलित होन के लिए बैंकाक, थाईलैंड का दौरा किया।
- डा. ए.के. सिंह (उपमहानिदेशक, एनआरएम) ने 1 जून, 2012 को ''दक्षिण एशिया में खाद्य सुरक्षा और जल संसाधनों का टिकाऊ उपयोग को समुन्नत बनाने हेतु फसल प्रणालियों की मॉडलिग में क्षमता विकास'' पर सार्क-आस्ट्रेलिया परियोजना की मध्यावधि समीक्षा बैठक में सम्मिलित होने हेतु कैंडी, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. एम. एम.पांडे (उपमहानिदेशक, कृषि अभियांत्रिकी) ने 15 से 16 मई, 2012 तक बैंकाक में कृषि मशीनरी के परिरक्षण के लिए एशिया पैसिफिक 'ए एन टी ए एम' के तकनीकी कार्यकारी समूह और स्टीरिंग समिति की बैठक तथा 17 मई, 2012 को एशिया में टिकाऊ कृषि मशीनीकरण पर एफएओ/ एपीएसीएईएम की बैठक में सम्मिलित होने हेतु बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. एन सुबाश (वरिष्ठ वैज्ञानिक, ऐग्रोमेट) तथा डा. मोहम्मद शमीम (वैज्ञानिक, ऐग्रोमेट) पीडीएफएसआर, मोदीपुरम, मेरठ) ने 26 मई से 1 जून, 2012 तक कैंडी, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. पी. विजय कुमार (व.वै., कृषि मौसम विज्ञान, सीआरआईडीए, हैदराबाद) ने 26 मई से 1 जून 2012 तक केंडी, श्रीलंका का दौरा किया।

- डा. पी के महापात्रा (वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि वानिकी, एन आर एम), डा. अनूप दास (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान) तथा डा. बी. यू. चौधरी (वरिष्ठ वैज्ञानिक,मृदा विज्ञान, एनआरएम पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमियम) ने सार्क कृषि केन्द्र आयोजित कार्यशाला-पूर्व, द्वितीय प्रशिक्षण कार्यशाला तथा ''दक्षिण एशिया मे खाद्य सुरक्षा व जल संसाधनो का उपयोग समुन्नत बनाने हेतु फसल प्रणालियों की मॉडलिग में क्षमता विकास'' पर सार्क-आस्ट्रेलिया परियोजना संबंधी बैठक में सम्मिलित होने हेतु कैंडी, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. दीपका रंजन सेना (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीडब्लूसीईसीएस तथा डब्लूसीआर व टीआई, देहरादून) ने 26 मई से 1 जून 2012 तक कैंडी, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. आर जेयाबासकरण (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएमएफआरआई, कोचीन) ने 30 से 31 मई, 2012 तक 'कार्यनीतिक क्रियात्मक कार्यक्रम मात्सिकी संकेतक' पर क्षेत्रीय कार्यशाला में सम्मिलित होने के लिए फुकेट, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. आर के यादव (प्रधान वैज्ञानिक, सीएसएसआरआई, करनाल) ने 26 मई से 1 जून, 2012 तक कैंडी, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. पी के महापात्रा (वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि वानिकी, एन आर एम), डा. अनूप दास (वरिष्ठ वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान) तथा डा. बी यू चौधरी (वरिष्ठ वैज्ञानिक,मृदा विज्ञान, एन आर एम पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमियम, मेघालय) ने 26 मई से 1 जून, 2012 तक कैंडी, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. मालविका ददलानी (संयुक्त निदेशक, आई ए आर आई, नई दिल्ली) ने 29 अक्तूबर से 1 नवम्बर ,2012 तक 'विकास हेतु कृषि अनुसंधान पर वैश्विक सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए पुंटा डेल एस्ट, उरूगुए का दौरा किया।
- डा. रमेश चन्द (निदेशक, एनसीएपी, नई दिल्ली) ने 29 अक्तूबर से 1 नवम्बर ,2012 तक 'विकास हेतु कृषि अनुसंधान' पर वैश्विक सम्मेलन में सम्मिलित होन के लिए पुंटा डेल एस्ट, उरूगुए का दौरा किया।
- डा. एस. अय्यप्पन (सचिव, डेयर तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिशद) ने 29 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2012 तक 'विकास हेतु कृषि अनुसंधान' तथा उसके बाद निधि परिषद की 8वीं बैठक में सम्मिलित होने हेतु उरूगुए का दौरा किया।
- डा. जीतेन्द्र कुमार सुन्दरे (प्रधान वैज्ञानिक, सीआईबीए, चैन्नई) ने 7 से 12 नवम्बर, 2012 तक जलजीवपालन व होमस्टीड पर जल व खाद्य बैठक से संबंधित चुनौती कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु ढाका, बंगलादेश का दौरा किया।
- डा. बीरपाल सिंह (निदेशक, सीपीआरआई, शिमला) ने 19 से 23 नवम्बर, 2012 तक सीआईपी के ट्रस्टी बोर्ड की बैठक में शामिल होने हेतु सी आई पी मुख्यालय, लिमा, पेरू का दौरा किया।
- डा. धीमान वर्मन (वरिष्ठ वैज्ञानिक) डा. एस शुभाशीष मंडल (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डा. एस के सारंगी (वरिष्ठ वैज्ञानिक सीएसएसआरएस क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, प.ब.) ने 7 से 12 नवम्बर, 2012 तक सीपीडब्ल्यूएफ- जी 2 परियोजना की समीक्षा व नियोजन कार्यशाला में भाग लेने हेतु बंगलादेश का दौरा किया।
- प्रौ. एस के दत्ता (उपमहानिदेशक, फसल विज्ञान) ने 12 से 15 नवम्बर, 2012 तक गेहूं उपज कंजोर्सियम फंड्स सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए मैक्सिको का दौरा किया।
- डा. यशपाल सिंह सहरावत (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 12 से 16 नवम्बर, 2012 तक कृषि मौडल अन्तर्तुलना व सुधार परियोजना, दक्षिण एशिया किक-ऑफ कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. बी गंगवार (परियोजना निदेशक), डा. हरबीर सिंह (प्रधान वैज्ञानिक) तथा डा. एन सुभाष (वरिष्ठ वैज्ञानिक, पीडीएफएसआर, मोदीपुरम) ने 12 से 16 नवम्बर, 2012 तक कृषि मॉडल अन्तर्तुलना व सुधार परियोजना, दक्षिण एशिया किक-ऑफ कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. आर.के. शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, डीडब्लुआर, करनाल) ने 14 से 17 नवम्बर, 2012 तक संस्थाओं की समन्वय समिति की अन्तर्राष्ट्रीय गेहूं पहल की पहली बैठक तथा गेहूं सीआरपी गतिविधियों पर विचार-विमर्श (16 से 17 नवम्बर, 2012) में शामिल होने हेतु मैक्सिको का दौरा किया।
- डा. एम. एम. मुस्तफा (निदेशक) ने 19 से 24 नवम्बर, 2012 तक तथा डा. थेंगावेलु (वरिष्ठ वैज्ञानिक) व एमएस सरस्वती (वरिष्ठ वैज्ञानिक) ने 19 से 22 नवम्बर, 2012 तक अन्तर्राष्ट्रीय केला सिम्पोजियम में सम्मिलित होने के लिए ताईवान का दौरा किया।
- श्रीमती सुमिता दासगुप्ता (अवर सचिव, सीजी डेयर) ने 19 से 24 नवम्बर, 2012 तक अनुसंधान व विस्तार हेतु एशियायी व अफ्रीकी महिलाओं के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु फिलिपीन्स का दौरा किया।
- डा. वी.के. गुप्ता (भा.कृ.अ.प. राष्ट्रीय प्रोफेसर, आईएएसआरआइ, नई दिल्ली) ने 'सीआरपी 1.1 बारानी प्रणलियां सीजीआईएआर बैठक के गरीब व निराश्रितों के लिए समेकित कृषि उत्पादन प्रणालियों' में सम्मिलित होने हेतु 26 से 28 नवम्बर, 2012 तक इंग्लैंड का दौरा किया।
- डा. बी.पी. सिंह (निदेशक, डा. संजीव शर्मा (वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डा. एस. सुन्दरेशा (वैज्ञानिक, सीपीआरआई, शिमला) ने 28 से 29 नवम्बर, 2012 तक ''खाद्य सुरक्षा व कृषक समृद्धि हेतु जैव प्रौद्योगिकी तथा ए वी एस पी-।। आलू सहभागियों की बैठक'' में सम्मिलित होने हेतु ढाका, बंगलादेश का दौरा किया।
- डा. पी.पी. तिरूमलाईस्वामी (वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान, मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़) ने 11 से 12 दिसम्बर, 2012 तक 'मूंगफली का बैक्टिरियल विल्ट तथा रोग हेतु स्क्लेरोटियम तना' पर एशिया के कार्यकारी समूह की बैठक में सम्मिलित होने के लिए बैंकाक, थाइलैंड का दौरा किया।
- डा. टी.के. श्रीनिवास गोपाल (निदेशक, सीआईएफटी) ने 3 से 5 दिसम्बर, 2012 तक कोलम्बो, श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. हिमांशु पाठक (वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईएआरआई, नई दिल्ली) ने 26 नवम्बर से 8 दिसम्बर, 2012 तक दोहा, कतर का दौरा किया

डेयर/भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कार्मिकों का अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनियुक्ति व प्रशिक्षण संबंधी दौरों का विवरण अनुबंध 12 में दिया गया है।

❑